Need to establish educational institutions of excellence in the country to stop migration of students- laid

श्री श्रीरंग आप्पा बारणे (मावल): केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय की एक रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2022 में हमारे देश से 7,50,365 छात्र विदेशी विश्वविद्यालयों में स्नातक और स्नातकोत्तर की शिक्षा लेने हेतु विदेश गए जबकि वर्ष 2021 की तुलना में इसमें 68% की भारी वृद्धि हुई है । यह हमें सोचने पर मजबूर करता है कि ये प्रतिभाशाली छात्र देश में उच्च शिक्षा क्यों नहीं लेना चाहते हैं । विदेशों में शिक्षा लेने के पश्चात इनका देश के प्रति क्या योगदान रहेगा । हम ऐसा शिक्षण संस्थान क्यों नहीं बना पा रहे है कि ये प्रतिभावान छात्र देश में ही शिक्षा लें । आज के समय में यदि प्रति छात्र लगभग 1 करोड़ खर्च हो रहा है तो शिक्षा के नाम पर कितना पैसा देश से बाहर विदेशों में जा रहा है । इसके अतिरिक्त यह भी विषय है कि यदि ये प्रतिभावान छात्र विदेशों में शिक्षा लेने के बाद वहीं नौकरी हेतु बस गए तो हम देश के प्रतिभावान नवयुवको को खो देंगे । दूसरी ओर, जबकि ये बच्चे मूल रूप से बुद्धिमान हैं, वे इस देश की सामाजिक व्यवस्था, शिक्षा प्रणाली को इनकी आवश्कता है । अतः मेरा सरकार से अनुरोध है कि इस गंभीर विषय पर विचार करे तथा देश में ऐसे संस्थानों का निर्माण किया जाए जिससे इन प्रतिभावान छात्रों को देश में ही यह शिक्षा प्राप्त हो सके ।